BA Part-I (H)
Paper I

Dr. Chiranjeev Kumar Thakur
Assistant Professor (GT)
Department of Sociology
VSJ College Rajnagar

सामाजिक संरचना (Social structure) ⇒ सामाजिक संरचना की अवधारणा का सर्वप्रथम हरबर्ट स्पेन्सर ने अपनी पुस्तक Principle of Sociology में किया। इसके बाद दुर्खीम ने अपनी पुस्तक The Rules of Sociology method में किया। सामाजिक संरचना को समझे बिना समाज को नहीं समझा जा सकता। जिस प्रकार हाथ, पैर, आँख, नाक आदि शरीर रूपी संरचना का निर्माण करते हैं, उसी प्रकार अनेक इकाईयां मिलकर समाज की संरचना का निर्माण करते हैं। स्पेन्सर सामाजिक संरचना की तुलना मानव शरीर की संरचना से करते हैं।

पेंगुइन डिक्शनरी के अनुसार " सामाजिक संरचना से तात्पर्य समाज की विभिन्न इकाइयों के बीच प्रतिमानित, व्यवस्थित तथा स्थाई सम्बन्धों से है।

पारसंस (Essays in Sociological theory) के अनुसार " संबंधित संस्थाओं, अभिकरणों और सामाजिक प्रतिमानों के साथ ही समूह के प्रत्येक व्यक्ति की स्थितियां तथा भूमिकाओं की विशिष्ट व्यवस्था को प्रकट करने के लिए सामाजिक संरचना शब्द का प्रयोग किया जाता है।"

कार्लमैनहीम (Ideology and utopia) के अनुसार, "सामाजिक संरचना परस्पर क्रिया करती हुई सामाजिक शक्तियों का जाल है जिसमें अवलोकन और चिन्तन की विभिन्न प्रणालियों का जन्म होता है।"

गिन्सबर्ग के अनुसार, "सामाजिक संरचना का अध्ययन संगठन के प्रमुख स्वरूपों अर्थात समूहों, समितियों तथा संस्थाओं के प्रकार एवं इनके संकुल जिनसे कि समाज का निर्माण होता है, से सम्बन्धित है।"

अतः स्पष्ट है कि सामाजिक संरचना समाज की विभिन्न इकाइयों, समूहों, संस्थाओं, समितियों सामाजिक सम्बन्धों से निर्मित एक प्रतिमानित एवं क्रमबद्ध ढांचा है।

सामाजिक संरचना के सम्बन्ध में कुछ विचारकों के विचार

① नेडिल

a) सामाजिक संरचना मूर्त होती है जिसे सदस्यों के व्यवहारों में देखा जाता है।

b) इसके लिए सामाजिक संरचना विभिन्न भागों की क्रमबद्धता को व्यक्त करती है जो अपेक्षाकृत स्थायी होते हैं।

② पारसंस

a) सामाजिक संरचना का निर्माण समाज की विभिन्न संस्थाओं, एजेन्सियों और सामाजिक प्रतिमान से होता है।

b) इन्ही इकाइयों के कारण व्यक्ति को समाज में निश्चित स्थान प्राप्त होता है।

c) सामाजिक संरचना अमूर्त है।

③ रेडक्लिफ ब्राउन

a) सामाजिक संरचना 'व्यक्तियों की क्रमबद्धता' है।

b) व्यक्तियों के बीच परस्पर संबंध को सामाजिक संरचना का अंग मानते हैं।

④ लेवी स्ट्रॉस

a) ये सामाजिक संरचना को मानसिक प्रत्यय (Mental construct) मानते हैं।

b) सामाजिक संरचना का अनुभविक वास्तविकता से कोई लेना देना नहीं है।

सामाजिक संरचना की विशेषताएं ⇒ सामाजिक संरचना की विशेषताएं इस प्रकार हैं ▷

① सामाजिक संरचना समाज के बाह्य स्वरूप का बोध कराती है- सामाजिक संरचना का निर्माण विभिन्न इकाइयों से होता है। ये इकाइयां जब एक क्रमबद्ध व्यवस्था में जुड़ जाती हैं तो एक बाह्य ढांचे का निर्माण होता है।

② सामाजिक संरचना अखण्ड व्यवस्था नहीं है → प्रत्येक सामाजिक संरचना का निर्माण विभिन्न इकाइयों, व्यक्तियों, समूहों, संस्थाओं से होता है। इस प्रकार प्रत्येक संरचना कई खण्डों से मिलकर बनी होती है, अतः वह अखण्ड नहीं है।

③ निश्चित प्रतिमान = सामाजिक संरचना का निर्माण विभिन्न इकाइयों से होता है, ये इकाइयां अस्त व्यस्त और बिखरी हुई नहीं होती वरन् उनमें परस्पर निश्चित प्रतिमान होता है।

④ सामाजिक संरचना की इकाइयों में एक क्रमबद्धता पायी जाती है = किसी भी सामाजिक संरचना का निर्माण मात्र इकाइयों के जुड़ाव या योग से नहीं होता वरन् उन्हें एक विशेष क्रम में जोड़ने से होता है। क्रम के अभाव में संरचना नहीं बन सकती।

⑤ सामाजिक संरचना अपेक्षाकृत एक स्थायी अवधारणा है- सामाजिक संरचना का निर्माण करने वाली इकाइयां अपेक्षाकृत स्थायी होती है।

⑥ सामाजिक संरचना अमूर्त होती है = सामाजिक संरचना का निर्माण विभिन्न संस्थाओं, समितियों, श्रेणियों, प्रतिमानों प्रस्थितियों एवं भूमिकाओं से मिलकर होता है। ये सभी इकाइयां अमूर्त है इनका भौतिक वस्तु की भांति कोई ठोस आकार या स्वरूप नहीं है, उन्हें देखा या छुआ नहीं जा सकता। अतः इनसे निर्मित सामाजिक संरचना भी अमूर्त होती है।

⑦ सभी समाजों की सामाजिक संरचनाएं भी अलग-अलग होती है।